प्राक्कथन

समय के बदलते स्वरूप, औद्योगिकीकरण एवं शहरीकरण के कारण आज का मानव पहले की अपेक्षा अधिक संकुचित एवं अमानवीय होता जा रहा है । उसके व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में मानवीय मूल्य, करुणा, दया, क्षमा, सहानुभूति जैसे शब्द अर्थहीन होते जा रहे हैं । धर्म और राजनीति के मिश्रण ने मानव के वर्तमान जीवन को और कलुषित बना दिया है । मानव के ऐसे जटिल जीवन एवं उसकी सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्त करने में अन्य विधाओं की अपेक्षा समकालीन उपन्यास साहित्य का विशेष महत्त्व है ।

हिन्दी की समकालीन उपन्यासकारों द्वारा मानव के ऐसे जटिल जीवन एवं उसके सामाजिक समस्याओं से जुड़े विभिन्न पहलुओं को उपन्यासों में कुशलता पूर्वक समाहित किया गया है । 'हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का अनुशीलन' शोध-विषय होना वर्तमान समय की आवश्यकता है, ताकि इन उपन्यासकारों के उपन्यासों में व्यक्त विचारों की, उसकी सीमायें, कलात्मकता, पारस्परिक संबंध, उसका लक्ष्य एवं केन्द्र आदि जैसे विषयों का सटीक विश्लेषण हो सके । समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों में मेहरून्निसा परवेज एवं नासिरा शर्मा के ही उपन्यास उपलब्ध हैं । मेहरून्निसा परवेज ने व्यक्ति, परिवार एवं समाज के विभिन्न पहलुओं पर उपन्यासों की रचना की है । उत्कृष्ट साहित्यिक सेवाओं के लिए इन्हें साहित्यभूषण एवं पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया है । नासिरा शर्मा के उपन्यासों में भी समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं का वर्णन है । इन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त संघर्षों को अपने लेखन का आधार बनाया है । उत्कृष्ट साहित्यिक सेवा के लिए इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से

सम्मानित किया गया है । नासिरा शर्मा साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त करने वाली हिन्दी की प्रथम मुस्लिम महिला उपन्यासकार हैं ।

इस अनुसंधान कार्य के निष्कर्ष से यह प्रमाणित होता है कि हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यास वैचारिक सामाजिक एवं राजनीतिक परिपेक्ष्य से विशिष्ट है जो सामाजिक परिवर्तन एवं उन्नयन में सहायक है । क्योंकि एक स्वस्थ समाज और उन्नत राष्ट्र के निर्माण में ऐसे विचार अत्यंत ही महत्वपूर्ण कारक है ।

मुझे आशा है कि इस शोध-प्रबंध से भारतीय समाज के विविधताओं में एकता के दर्शन का संदेश और सबल होगा एवं वर्तमान समय के दिग्भ्रमित समाज और विचारहीन होती युवा पीढी के लिए मार्गदर्शक और दिशा देने वाला सिद्ध होगा ।

इस शोध-प्रबंध को मैंने पूर्ण मनोयोग से अपने शोध-निर्देशक डॉ॰ सूर्यकान्त त्रिपाठी, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर के कुशल निर्देशन में विवेचित किया है ।इसके वाबजूद भी कई पक्ष छूट गए होंगे और कुछ कमियाँ रह गई होगी । विवेचन में ऐसी कमियाँ मेरी अपनी है और मैं इसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।